पीयर-रिव्यूड जर्नल
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org

अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 2026, पृष्ठ 54–59
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n3.2026.098

भारतीय संस्कृति आरो प्रकृति के संदर्भ में अंगिका उपन्यासो॑ में नारी चेतना

डॉ० गौतम कुमार यादव [1]

प्राप्तिः 9 अगस्त 2026 / स्वीकृतः 17 अगस्त 2026 / प्रकाशित ऑनलाइन: 18 अगस्त 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

सारांश
हिन्दी उपन्यासो॑ में नारी चेतना अक्सर महानगरीय आरो बौद्धिक बेसी होय छै, जबे॑ कि अंगिका उपन्यासो॑ में ई माटी के गंध आरो पेट के भूख सें जुड़लो॑ होय छै। यहाँकरो॑ नारी लिबरेशन शब्द नै जानै छै, मतरकि वें अपनो॑ हक के लेली लड़ै ले॑ जानै छै। अंगिका उपन्यासें नारी के॑ एकटा नया आकाश देनें छै, मतरकि अभी कई कोस चलना बाकी छै। अंगिका उपन्यास विधा में पुरुषो॑ के वर्चस्व रहलो॑ छै। सुमन सूरो, डॉ. तेजनारायण कुशवाहा, आमोद कुमार मिश्र, अनिरुद्ध प्रभास, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, विजेता मुदगलपुरी, अरुणेन्द्र भारती, डॉ. अमरेन्द्र, रंजन आरन्हीं अपनो॑ पहचान स्थापित करनें छै। वहे॑ रं जबे॑ ताँय बेसी संख्या में नारीसिनी अपनो॑ कलम नै उठैतै, तबे॑ ताँय नारी चेतना केरो॑ एक पक्ष हमेशा ओझल रहतै। क्षेत्रीय भाषा हुवे॑ के कारण अंगिका उपन्यास आरो एकरो॑ रचना के पहुँच बहुत कम छै। जेकरो॑ कारण स्त्री विमर्श व्यापक फलक पे॑ नै आबे॑ पारै छै।

अंगिका उपन्यास साहित्य में नारी चेतना एकटा ऐहनो॑ यात्रा छिकै जे दासी सें शुरू होयके॑ व्यक्ति ताँय पहुँचै छै। ई बिहुला के ऊ संघर्ष रो॑ आधुनिक संस्करण छिकै, जहाँ हुनी मौत के खिलाफ नै, मतरकि ऊ समाज के खिलाफ खाड़ो॑ छै, जे ओकरा दोयम दर्जा के नागरिक मानै छै। अंगिका के उपन्यासकार मुबारकवाद के पात्र छै, कैन्हे॑ कि हुनी ऊ मौन के॑ तोड़नें छै, जे सदियों सें अंग प्रदेश के गलीसिनी में गुंजी रहलो॑ छेलै। यै लेली ई कहलो॑ जाबे॑ सकै छो॑ कि अंगिका साहित्य अबे॑ केवल मनोरंजन के साधन नै रहीके॑ ऊ सामाजिक परिवर्तन के एकटा सशक्त औजार बनी गेलो॑ छै। नारी चेतना अंगिका साहित्य के ऊ मसाल छिकै, जे आबै वाला समय में अंग प्रदेश के सामाजिक ढाँचा के॑ नया रूप देतै।

बीज शब्दः संस्कृति, फेमिनिज्म, मंजूषा कला, मर्मस्पर्शी, वैतरणी, तारकधारा, सेरीकल्चर, आत्मनिर्भर, चरमोत्कर्ष, ईश्वरोपासना, रूढ़िवादी, अपशकुन, दहेजलोभी, ओझागिरी, जादूटोना–टोटका, लोकनिंदा, तार्किकता, संकल्प, कमला मैया, जिजीविषा, अंधविश्वास, यौन चेतना, विद्रोही स्वरूप, सशक्तीकरण आरन्हीं।

[1] सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अंगिका विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर - 812007, बिहार

✉ डॉ० गौतम कुमार यादव

भारतीय संस्कृति केरों मूल अवधारणा में नारी के शक्तिस्वरूपा, अधिष्ठातृ मानलों गेलों छै। नारी मानव ही नै बलुक मानवता रों जन्मदातृ छिकै। प्राचीन वैदिक संस्कृति में कें बड्डी सम्मान आरो स्वतंत्रता प्राप्त छेलै। नारीसिनी धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लै रहै आरो शास्त्रार्थ भी करै रहै। ऋषि याज्ञवल्क्य के चकित करी दैवाली गार्गी आरो शंकराचार्य कें शास्त्रार्थ में पराजित करैवाली मंडन मिश्र रों पत्नी उभय भारती रों कथानक जग जाहिर छै। ईश्वर नें जबें सृष्टि के रचना करें लागलै, तबें सृष्टि कें पूर्णता प्रदान करै लेली मनु आरो शतरूपा कें पृथ्वी पें लानलकै। सृष्टि के अस्तित्व नारी सें शुरू होलै। नारी समाज आरो सृष्टि के आधार छिकै। हमरों शास्त्रसिनी में नारी कें आध्यात्मिकता केरों प्रतीक मानलों गेलों छै।

रामायण भारतीय संस्कृति आरो धार्मिक जीवन केरों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ छिकै। रामायण कथानक में नारी केरों स्थान महत्त्वपूर्ण छै, कैन्हें कि एकरा में नारी के भूमिका केवल एकटा पात्र के रूपों में नै, बलुक संस्कृति, प्रकृति आरो समाज रों विभिन्न पहलू कें दर्शाबै वाला प्रतीक के रूपों में छै। भारतीय सभ्यता आरो संस्कृति में नारी कें पूजलों जाय छै, जबें कि प्रकृति कें माता के रूपों में सम्मानित करलों जाय छै। नारी केरों संबंध संस्कृति आरो प्रकृति के बीच गहरा आरो निरंतर परिवर्तनशील संबंध के तरह होय छै। ई दोनो तत्त्व समाज में केन्द्रीय भूमिका निभाबै छै। रामायण में नारी कें प्रकृति सें गहरा रूपों में जोड़लों गेलों छै। सीता कें पृथ्वी के बेटी के रूपों में प्रस्तुत करलों गेलों छै, जे ई संकेत करै छै कि नारी आरो प्रकृति के बीच गहरा संबंध छै। सीता कें भूमि सें उत्पन्न होना आरो भूमि में समाहित होय जाना, ई एकटा प्रतीक छिकै, जे नारी के स्वाभाविक रिश्ता पृथ्वी आरो प्रकृति के साथ दर्शाबै छै। यै ब्रह्मांड में विद्यमान एकटा सत्य जेकरों प्रतिनिधि नारी अर्थात् प्रकृति जे समस्त संसार रों जननी छिकै। नारी सृजनात्मक शक्ति करों प्रतीक छिकै, जेकरा बिना जीवन रों कल्पना करना असंभव छै। नारी प्रकृति केरों ही पर्यायवाची रूप छिकै, कैन्हें कि ओकरा में प्रकृति जैसनों कयेकटा गुण – धैर्य, क्षमा, करुणा, सहनशीलता, वात्सल्य स्त्रीत्व सें जुड़लों छै। प्रकृति के शक्ति आरो सौंदर्य कें अक्सर नारी के साथ जोड़लों जाय छै। नारी केरों प्रजनन क्षमता आरो पोषण के शक्ति कें प्रकृति के शक्ति सें तुलना करलों जाय छै। वैदिक साहित्य में नारी कें पृथ्वी, उर्वरा आरो प्रकृति के रूपों में चित्रित करलों गेलों छै। नारी आरो प्रकृति दोनो कें 'शक्ति' केरों प्रतीक मानलों गेलों छै, जे सृजन आरो विनाश दोनो में भूमिका निभाबै छै। पृथ्वी माता गंगा, यमुना नदी आरनी कें नारी रूप में सम्मानित करलों गेलों छै।

साहित्य समाज के सिर्फ दर्पण ही नै, बलुक ओकरों भविष्य के पदचिह्न भी होय छै। जबें हमरासिनी अंगिका जैसनों आंचलिक भाषा के साहित्य रों बात करै छियै, तें हम्में वास्तव में ऊ विशाल जनसमूह केरों धड़कन के समझै के प्रयास करै छियै, जे गंगा के कछारों सें लै करीकें संथाल परगना के पहाड़ों ताँय फैललों होलों छै। अंगिका उपन्यास साहित्य पिछला कुछ दशकों सें जे उन्नति–प्रगति करनें छै ओकरा में नारी केवल एकटा पात्र के रूपों में नै, बलकु एक दृष्टि के रूपों में उभरलों छै। यहाँ नारी चेतना केरों अर्थ केवल पश्चिमी फेमिनिज्म सें नै छै, बलुक ई अपनों जड़ों सें जुड़लों पितृसत्ता सें टकरैतें आरो अपनों अस्तित्व लेली संघर्ष करतें होलों ऊ महिला रों कहानी छिकै, जे खेतों सें लै करीकें खलिहान ताँय आरो चूल्हा सें लै कें चौपाल ताँय आपनों उपस्थिति दर्ज कराय रहलों छै। बिहुला सें आधुनिक नारी ताँय अंग प्रदेश केरों संस्कृति में नारी के छवि द्वैध रहलों छै। एक तरफ सती बिहुला केरों धरती छिकै, जहाँ त्याग आरो पतिपरायणता के चरम आदर्श मौजूद छै, तें दोसरों तरफ ई भूमि मंजूषा कला आरो लोक गीतों के ऊ उर्बर भूमि छिकै, जहाँ नारी आपनों कला के माध्यम सें समाज कें नियंत्रित करी रहलों छै।

अंगिका उपन्यासों के शुरुआती दौर में (1970–75) के आसपास नारी चेतना दबलों होलों छेलै। उपन्यासों में स्त्री, पुरुष पात्रों के सुख–दुःख के सहयोगी मात्र छेलै, हालाँकि जैसें–जैसें आंचलिकता के प्रभाव बढ़लै, तें लेखकसिनी महसूस करें लागलै कि अंगिका समाज के असली सच तब ताँय अधूरा छै, जब ताँय स्त्री के आवाज कें नै सुनलों जाबें सकें। हुनी परिवार के धूरी तें छेबे करै, मतरकि निर्णय प्रक्रिया सें बाहर रहै छै। कयेकटा उपन्यासों में देखैलों गेलों छै कि किशारीसिनी केरों विवाह वृद्ध या अयोग्य पुरुषों सें करी देलों जाय छै। यहाँ पें नारी चेतना ओकरों मौन रुलाई में छिपलों रहै छै, जे बादों में आक्रोश बनी कें फूटै छै। दहेज अंगिका समाज रों एकटा अभिशाप रहलों छै। अंगिका उपन्यासों में एहिनों अनेक पात्र छै, जे दहेज रों कारणें घर सें निकाली देलों

जाय छै या होकरो॑ मानसिक रूप सें शोषण होय छै। यै परिस्थिति में जबे॑ पलटी के॑ जवाब दै छै ते॑ वहीं सें चेतना के उदय होय छै।

नारी चेतना पे॑ आधारित अंगिका उपन्यास के कुछेक नारी पात्र रो॑ संघर्ष गाथा के चर्चा ध्यातव्य छै–

अंतहीन वैतरणी

डॉ. आभा पूर्वे के लिखलो॑ अंगिका उपन्यास 'अंतहीन वैतरणी' में ऐहनो॑ नारी के संघर्ष, त्याग आरो आत्मनिर्भरता केरो॑ मर्मस्पर्शी बखान होलो॑ छै। अंगिका साहित्य के कयेकटा उपन्यासो॑ में यै तरह के परिस्थिति देखैले॑ मिलै छै कि नारी के शारीरिक आरो मानसिक प्रताड़ना कोय–न–कोय रूपो॑ में हुनको॑ ससुराल में करलो॑ जाय छै। अंतहीन वैतरणी उपन्यास में नायिका बच्ची के॑ हुनको॑ पति सेमल, सास आरो ससुर द्वारा जे प्रताड़ना मिलै छै, ऊ कोय सभ्य नारी लेली समझौता करना बड्डी कठिन छै। लेखिका नें नारी के तुलना अंतहीन वैतरणी सें करले॑ छै। वैतरणी एक कर्मकांडीय धार्मिक अवधारण सें सृजलो॑ एकटा नदी केरो॑ नाम छिकै। धार्मिक अवधारणा के अनुसार जबे॑ मनुष्य के मृत्यु होय जाय छै, होकरो॑ आत्मा के॑ हय वैतरणी नदी के॑ पारी करीके॑ यमलोक पहुँचै ले॑ पड़ै छै आरो वैतरणी नदी के॑ पार करीके॑ ऐला सें ऊ आत्मा के॑ धर्मराजें स्वर्ग भेजै छै। यै लेली श्राद्ध में गो–दान भी करबैलो॑ जाय छै, ताकि ऊ बछिया के पूँछ पकड़ी के॑ वैतरणी पार करी जाय। वैतरणी मरलो॑ मनुष्य के॑ तारी दै छै, मगर मनुष्य के करलो॑ पाप सें ग्रसित होयके॑ ओकरो॑ तारकधारा हरदम विकल रहै छै। मनुष्य के॑ ते॑ त्राण दे॑ दै छै, मगर अपनो॑ त्राण लेली छटपटैते॑ रहै छै। ई वैतरणी नदी के (पीड़ा के) अंत नै छै। ई सुदीर्घ नदी छिकै। उपन्यास के नायिका बच्ची के जीवन ठीक वैतरणी रं छै। यहे॑ वैतरणी छिकै, नारी–नारी के नियति, नारी के प्रारब्ध।

'अंतहीन वैतरणी' पितृसत्तात्मक समाज में एक नारी के संघर्ष, त्याग आरो अंततः होकरो॑ आत्मनिर्भरता के एकटा मर्मस्पर्शी गाथा छिकै। ई उपन्यास केवल एक कहानी के रूपो॑ में नै, बलुक नारी चेतना के विभिन्न आयामो॑ के॑ उकेरै वाला एकटा जीवन्त दस्तावेज छिकै। अंतहीन वैतरणी उपन्यास के नायिका 'बच्ची' के माध्यम सें लेखिका नें नारी जीवन केरो॑ विडम्बना आरो होकरो॑ चेतना के विकास के॑ क्रमिक रूपो॑ सें देखनें छै। एकरा में नारी चेतना के निम्नलिखित बिन्दु प्रमुखता सें उभरलो॑ छै–

1– उपन्यास में बच्ची एकटा शिक्षित पात्र छिकै। जबे॑ होकरो॑ वैवाहिक जीवन पति सेमल द्वारा उपेक्षा आरो संवदेनहीनता के कारण बिखरे॑ लागलै, ते॑ हुनी अपनो॑ पिता जानकी प्रसाद के सहयोग सें अपनो॑ पढ़ाय जारी रखै छै आरो आई.ए. के परीक्षा पास करी जाय छै। यहे॑ शिक्षा हुनको॑ भीतर चेतना जगाय छै, जेकरा सें ऊ बादो॑ में सेरीकल्चर विभाग में सरकारी नौकरी प्राप्त करीके॑ आत्मनिर्भर बनै छै। ई कदम तत्कालीन समाज में नारी के॑ अपनो॑ अलग पहचान बनाय लेली छटपटाहट के॑ दर्शाय छै।

2– नायिका बच्ची के चरित्र भारतीय नारी के वै पारंपरिक रूपो॑ के॑ भी देखाय छै, जे परिवार के मर्यादा आरो सुख लेली अपनो॑ सब कुछ न्योछावर करी दै छै। ससुराल के बदहाल आर्थिक स्थिति के॑ सुधारै लेली हुनी अपनो॑ स्त्री–धन गहना सहित हाथो॑ के चूड़ी ताँय दे॑ दै छै। बच्ची के पति सेमल नें हुनका साथ दुर्व्यवहार आरो आर्थिक शोषण (सरकारी सेवा के दौरान हुनको॑ वेतन उठाय लेना) करला के बावजूद हुनी बड्डी समय ताँय धैर्य बनैनें राखलकै।

3– उपन्यास में सेमल केरो॑ चरित्र एकटा शोषक पति के रूपो॑ में चित्रित करलो॑ गेलो॑ छै, जे कि पत्नी के॑ सिर्फ संपत्ति आरो धन प्राप्ति केरो॑ साधन मात्र समझै छै। वैं नै सिर्फ बच्ची के मायके सें मिललो॑ संपत्ति पे॑ नजर राखै छै, बलुक अंत में बंदूक के नोको॑ पर हुनका सें हवेली आरो जग्घो॑–जमीन अपनो॑ नामो॑ सें करवाय लै छै। शोषण के चरमोत्कर्ष क्षण में भी बच्ची नें अपनो॑ परिचय देते॑ हुवे॑ नै सिर्फ हुनका संपत्ति सौंपी देलकै, बलुक अपनो॑ कोखी के संतान बेटा अश्वघोष पर सें भी अपनो॑ अधिकार त्यागी के॑ सेमल केरो॑ अंहकार के॑ आईना देखैलकै। नायिका बच्ची केरो॑ त्याग एकटा मौन विद्रोही छेलै। बच्ची रो॑ अपनो॑ बेटीसिनी (रजनीगंधा आरो बिजली) रो॑ प्रति प्रेम हुनको॑ चेतना के एकटा आरो पक्ष छै। पैहलो॑ बेटी रजनीगंधा के इलाज अभाव में मृत्यु, हुनका तोड़ी दै छै, मतरकि हुनी हार नै मानलकै। बच्ची अपनो॑ दम्मो॑ पे॑ दोसरी बेटी (बिजली) आरो बेटा (अश्वघोष) केरो॑ पालन–पोषण करै छै। बी.डी.ओ. श्रीवास्तव बाबू के सहयोग सें बिजली बेटी के शादी एकटा सुयोग्य घर में सुनिश्चित करीके॑ अपनो॑ नैतिक दायित्व सें मुक्त होयके॑ संसार सें विरक्ति

आरो शांति के तलाश में काशी चल्लोॅ जाय छै। ऊपर वर्णित तथ्योॅ सें स्पष्ट होय छै कि उपन्यास रोॅ शीर्षक अंतहीन वैतरणी नारी जीवन के अंतहीन कष्टोॅ आरो संघर्षो के प्रतीक छिकै।

भदवा चंदर

उपन्यासकार सुरेन्द्र प्रसाद यादव के लिखलोॅ अंगिका उपन्यास 'भदवा चंदर' व्यक्तित्व विशेष पर विवरणात्मक शैली में लिखलोॅ उपन्यास छिकै। जै में एकटा शिशु के जन्म सें लेॅ करीकेॅ जन्मकालीन प्राकृतिक परिस्थिति के कारण ओकरोॅ 'भदवा चंदर' नामकरण ओकरोॅ माय–बाप के उत्साह, आकांक्षा, ओकरोॅ पालन–पोषण, ओकरोॅ तेजस्विता, प्रथम श्रेणी में मैट्रिक पास करला के बाद गामोॅ के मुखिया छल–प्रपंच के कारण कॉलेज में नाम लिखाबै में असफलता, हारी–फारी केॅ अपनोॅ भक्त भजनिया पिता धनुकलालोॅ के संपर्क में रहीकेॅ आत्मा–परमात्मा, तपस्या, ईश्वरोपासना में रमी गेला के बाद आपनोॅ बाल–सहचरी सरबतिया आरो माय–बाप केॅ छोड़ीकेॅ भदवा चंदर गाँव केॅ छोड़ी नेपाल परैला के बाद गामोॅ में माय–बाप, गोतिया–लैया आरो सरबतिया आरन्हीं केॅ असीम पीड़ा केरोॅ वर्णन करलोॅ गेलोॅ छै।

'भदवा चंदर' नै केवल एकटा आंचलिक कथा छिकै, बलुक ई ग्रामीण परिवेश में नारी चेतना के बदलतेॅ स्वरूप रोॅ एकटा जीवन्त दस्तावेज भी छिकै। एकरा में स्त्री पात्रोॅ के माध्यम सें लेखक नें समाज रोॅ रूढ़िवादी पितृसत्तात्मक दबाव आरो ओकरोॅ विरुद्ध उठतेॅ आत्मनिर्भरता के आवाज केॅ बड्डी प्रखरता सें उद्घाटित करनें छै। ई उपन्यास में नारी चेतना के पैहलोॅ स्वर विधवासिनी के सामाजिक स्थिति के रूपोॅ में उभरै छै। उपन्यासकार नें समाज के दोहरा चरित्र पेॅ प्रहार करनें छै, जहाँ पति के मृत्यु के होला के बाद नारी केॅ बेचारी या अपशकुनी मानीकेॅ होकरोॅ सिंगार, खुशी आरन्हीं केॅ छीनी लेलोॅ जाय छै। अरुणा आरो रीना जैसनोॅ पात्रोॅ के दुःख ई छै कि ओकरोॅ अपनोॅ ही समाज ओकरा डायन कहीकेॅ प्रताड़ित करै छै। ई चित्राण दर्शाय छै कि नारी चेतना करोॅ मार्ग सामाजिक वर्जना के काँटोॅ सें भरलोॅ होलोॅ छै। ई उपन्यास के सबसें सशक्त पक्ष तबेॅ सामनाँ आबै छै जबेॅ नारी अत्याचार सहै के बजाय विद्रोह के मार्ग चुनै छै। वीणा, स्वाति आरो सुनीता जैसनोॅ पात्र ई नया चेतना के प्रतीक छिकै। वीणा देहजलोभी पति केॅ छोड़ीकेॅ अपनोॅ बेटी के पालन–पोषण अकेले करै छै आरो समाज में सम्मान पाबै छै। स्वाति स्पष्ट कहै छै कि हुनी अपनोॅ पति केॅ यै लेली छोड़लेॅ छै कि ऊ देह–व्यापार जैसनोॅ अनैतिक कार्य में संलिप्त रहै छै। गुलिया देवी जैसनोॅ अनपढ़ महिला भी सात बार बीहा करै लेली विवश होय छै, कैन्हेॅ कि ऊ पति के मार सहै लेली तैयार नै छेलै। एकरा सें स्पष्ट होय छै कि अंग क्षेत्र केरोॅ महिलासिनी अबेॅ अपनेॅआप केॅ त्यागलोॅ होलोॅ नै मानीकेॅ पुरुषोॅ केॅ ओकरोॅ द्वारा त्यागलोॅ गेलोॅ मानेॅ लागलै छै। 'सरबतिया' ई उपन्यास के धूरी छिकै, हुनी कवेल भदवा चंदर केरोॅ प्रतीक्षारत प्रेमिका नै छिकै, बलुक हुनी ज्ञान आरो विवेक रोॅ भी प्रतीक छिकै। हुनी उपन्यास में मँहगी राजकुमारी केॅ लोककथा रोॅ माध्यम सें नारी के भाग्य आरो पुरुषार्थ के दर्शन केॅ स्पष्ट करै छै। मँहगी के यहेॅ कहना कि 'हर कोई अपनोॅ भाग्य सें खाय छै', पिता के अहंकार केॅ चुनौती दै छै। अंत में सरबतिया आरो भदवा चंदर दोनो साथ–साथ कंधा सें कंधा मिलाय केॅ गाँव में शिक्षक–शिक्षिका के रूपोॅ में कार्य करना नारी चेतना के पूर्णता केॅ दर्शाय छै।

नटुआ दयाल

डॉ. विद्या रानी के लिखलोॅ अंगिका उपन्यास 'नटुआ दयाल' अंग महाजनपद के लोककंठ में व्याप्त 'नटुआ दयाल' लोकगाथा पेॅ आधारित छै। टोटका, जादू–टोना, तंतर–मंतर–जंतर, डायनपनोॅ, ओझागिरी, नजर–गुजर के साधना, क्रिया–कलाप के घात–प्रतिघात सें गढ़लोॅ हय उपन्यास के आधार तेॅ नटुआ दयाल लोकगाथा छेबे करै, एकरोॅ साथें अपनोॅ भक्त–भक्तिन लेली देवी कमला मैया के कृपा भी दृष्टिगोचर होय छै। उपन्यास में नटुआ के संघर्ष आरो ओकरोॅ कला के ईर्द–गिर्द बुनलोॅ गेलोॅ छै, मतरकि सूक्ष्म विश्लेषण करला पेॅ एकरा में नारी चेतना के विभिन्न आयाम जैसें–ममता, संघर्ष, लोक भय आरो समर्पण प्रमुखता सें उभरै छै। उपन्यास में नारी चेतना के मुख्य रूप सें तीनटा स्त्री पात्रोॅ के माध्यम सें समझलोॅ जाबेॅ सकेॅ–(क) बहुरा (नटुआ के सास), (ख) अमरौतिया (नटुआ के पत्नी) आरो (ग) भागोवंती (नटुआ के बहिन)।

(क) बहुरा : शक्ति आरो लोक–लाज के द्वंद्व – बहुरा ई उपन्यास के ऐसनोॅ पात्र छेकै, जेकरा समाज नें डायन घोषित करी देनें छै। यहाँ पेॅ नारी चेतना के एकटा नकारात्मक मतरकि यथार्थवादी पक्ष दिखै छै, जहाँ एक असकल्लोॅ नारी अपनोॅ सुरक्षा आरो अपनोॅ बेटी के भविष्य लेली तंत्रविद्या के सहारा लै छै। ओकरोॅ चेतना में अपनोॅ बेटी अमरौतिया के विवाह आरो ओकरोॅ सुरक्षित भविष्य सर्वोपरि छै। हुनीं लोकनिंदा सहतेॅ हुवेॅ भी समाज के सामनें झुकै छै आरो अपनोॅ बेटी के घर बसाय लेली

'हथपकड़ा' विवाह जैसनो॑ साहसिक कदम उठाय छै। ई हुनको॑ ममतामयी चेतना ही छिकै जे ओकरा समाज सें लड़ै के शक्ति दै छै।

(ख) अमरोतिया : मौन समर्पण आरो आत्मिक शक्ति – अमरौतिया उपन्यास के नायिका छिकै आरो हुनी पारंपरिक नारी चेतना के प्रतिनिधित्व करै छै। हुनको॑ व्यक्तित्व धैर्य आरो अटूट प्रेम सें निर्मित छै। विवाह के मात्र तीन दिनो॑ के मिलन के बाद ही बारह बरसो॑ ताँय विरह के अग्नि में जलै छै, जे ओकरो॑ चारित्रिक दृढ़ता के॑ दर्शाय छै।

नैतिक बोध – हुनी जानै छेलै कि हुनको॑ माय बहुरा डायन छिकै, हुनको॑ पति नटुआ दयाल के जीवन के॑ खतरा छै। यहाँ हुनको॑ चेतना आरो अपनो॑ माय के प्रति निष्ठा आरो पति के प्रति प्रेम के बीच झूलै छै, जहाँ हुनी अंततः पति के रक्षा के मार्ग चुनै छै।

धैर्य – बारह बरसो॑ ताँय लंबा इंतजार पति के लेली हुनको॑ मानसिक शक्ति के परिचायक छिकै। हुनीं विरह में वनबेल खायके॑ भी अपनो॑ सतीत्व आरो प्रेम के रक्षा करै छै।

(ग) भागोवंती : सक्रिय आरो तार्किक चेतना – नटुआ दयाल के बहिन भागोवंती ई उपन्यास में सबसें अधिक सक्रिय नारी चेतना के रूपो॑ में उभरै छै।

तार्किकता : जबे॑ पूरा समाज नटुआ दयाल के॑ मृत मानिके॑ श्राद्ध कार्य लेली तुलै छै, तबे॑ भागोवंती नें अपनो॑ बुद्धिमत्ता सें ऊ पाखंड के॑ रोकलकै। हुनी तर्क दै छै आरो योजना बनायके॑ आपनो॑ माय–बाप के॑ आर्थिक आरो मानसिक शोषण सें बचाय छै।

आस्था आरो संकल्प : हुनको॑ चेतना में लोकदेवता 'कमला मैया' केरो॑ प्रति अटूट विश्वास छै, जे कि कमला मैया सें केवल प्रार्थना ही नै करै छै, बलुक हठ भी करै छै, हुनको॑ यहे॑ दृढ़ चेतना नटुआ दयाल के खोज रो॑ माध्यम बनै छै।

लोक संस्कृति, प्रकृति आरो नारी : उन्यास में नारीसिनी के सामूहिक रूप मैनी, सुग्गी, सोनामंती आरन्हीं लोक चेतना के॑ व्यक्त करै छै। जहाँ मैनी, सुग्गी जैसनो॑ नारीसिनी समाज के चपल आरो जिज्ञासु चेतना के॑ देखाय छै, वहीं सोनामंती जैसनो॑ सहेली विरह के समय में संबल प्रदान करै छै। नटुआ दयाल उपन्यास में लेखिका नें नारीसिनी के॑ केवल पुरुषो॑ के सहायक रूपो॑ में नै, बलुक कहानी के॑ गति दै वाली निर्णायक शक्ति के रूपो॑ में चित्रित करनें छै। चाहे ऊ बहुरा के॑ अपनो॑ बेटी लेली समाज सें टकराना रहे॑ या अमरौतिया के॑ बारह बरसो॑ के मौन तप रहे॑ या भागोवंती के तर्कपूर्ण संघर्ष कृत्य–सब्भे स्थितिं सिद्ध करै छै कि लोकगाथा के केन्द्र में नारी रो॑ अटूट जिजीविषा आरो ओकरो॑ चेतना ही विद्यमान छै।

अंगिका उपन्यासो॑ में नारी चेतना के विविध आयाम

(क) शैक्षणिक चेतना – आधुनिक अंगिका उपन्यासो॑ में बेटी के पढ़ाय के संकल्प एकटा प्रमुख कथानक बनी गेलो॑ छै। शिक्षा के माध्यम सें नारीसिनी अंधविश्वास आरो रूढ़ि के॑ तोड़ी रहलो॑ छै, हुनी अबे॑ ई सवाल पूछै छै कि वंशावली पंजी में ओकरो॑ नाम कैहने॑ नै होतै? हुनको॑ अंदर अबे॑ दुनिया देखै के सपना छै। नौकरी–चाकरी लेली हुनी अबे॑ प्रयासरत भी दिखै छै। ध्यातव्य छै कि अनुपलाल मंडल के लिखलो॑ उपन्यास 'नया सूरज : नया चाँन' के नायिक प्रभावती रहे॑ या फिर डॉ. मृदुला शुक्ला के लिखलो॑ उपन्यास 'फिनिक्स' के नायिका गंगा यैसिनी नारी पात्र के अंदर शैक्षणिक चेतना रो॑ अंश दिखै छै।

(ख) दैहिक आरो यौन चेतना : ई एकटा संवेदनशील विषय रहलो॑ छै, जेकरा अंगिका लेखकसिनी नें कुशलता सें छूनें छै। पारंपरिक समाजो॑ में नारी के यौन–इच्छा के॑ पाप मानलो॑ जाय छेलै, मतरकि समकालीन उपन्यासो॑ में नारी के प्रेम, विरह आरो ओकरो॑ शारीरिक इच्छा के॑ मानवीय धरातल पे॑ चित्रित करलो॑ गेलो॑ छै। ऊ आबे॑ देवी नै, बलुक इंसान बनै लेली चाहै छै। डॉ. आभा पूर्वे के लिखलो॑ अंगिका उपन्यास 'गुलबिया' ग्रामीण पृष्ठभूमि में नारी चेतना के एकटा अत्यन्त जटिल आरो विद्रोही स्वरूप के॑ प्रस्तुत करै छै।

(ग) राजनैतिक आरो सामाजिक चेतना : पंचायती राज्य व्यवस्था के बाद अंगिका उपन्यासो॑ में यै तरह के पात्रसिनी के भरमार होय गेलो॑ छै, जे आयको॑ समय में मुखिया या सरपंच जनप्रतिनिधि के तौर पे॑ चुनलो॑ जाय छै। हालाँकि शुरुआती दौर में हुनको॑ पति (मुखियापति या सरपंचपति) राज करै छै, मतरकि उपन्यास के अंत में अक्सर नारी के वास्तविक सशक्तीकरण के साथ होय छै, जहाँ हुनी अपनो॑ मोहर के महत्त्व के॑ समझी जाय छै।

(घ) भाषा के सौंदर्य आरो नारी रो॑ अभिव्यक्ति : अंगिका भाषा में एकटा शब्द छै 'गुमान'। उपन्यासो॑ में नारी जबे॑ अपनो॑ गुमान (स्वाभिमान) के बात करै छै, ते॑ ऊ हुनको॑ चेतना के शिखर होय छै। यहाँ के गाली, लोकगीत आरो मुहावरा नारी के औजार छिकै। जबे॑ वें कोहवर में गाय छै, ते॑ सृजन के बात करै छै। मतरकि जबे॑ वें समदाउन (विदाई गीत) गाय छै, ते॑ वें समूचे व्यवस्था पे॑ सवाल खाड़ो॑ करी दै छै।

संदर्भ ग्रंथः

पूर्वे, आभा. *अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास)*. अंगिका संसद, भागलपुर, 2022.

पूर्वे, आभा. *गुलबिया (अंगिका उपन्यास)*. अंगिका संसद, भागलपुर, 2022.

मंडल, अनूपलाल. *नया सूरजः नया चाँन (अंगिका उपन्यास)*. शेखर प्रकाशन, पटना, 1979.

यादव, सुरेन्द्र प्रसाद. *भदवा चंदर (अंगिका उपन्यास)*. अंगिका संसद, भागलपुर, 2007.

यादव, गौतम कुमार. *अंगिका उपन्यास साहित्यः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन* (शोधप्रबंध). तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, 2018.

रानी, विद्या. *नटुआ दयाल (अंगिका उपन्यास)*. शब्द सृष्टि, दिल्ली, 2010.

'स्मारिका', दर्शन परिषद्, बिहार, 46वाँ वार्षिक अधिवेशन, 2024, चिंतनधारा : नारी, संस्कृति और प्रकृति, पंजीयन संख्या 609 / 14–15.

शुक्ला, मृदुला. *फिनिक्स (अंगिका उपन्यास)*. अंगिका संसद, भागलपुर, 2005.